फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad
majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 268 1/– अक्टूबर 2010

आप–हम क्या–क्या करते हैं... (17)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ? ✱ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

बीस वर्षीय मजदूर : सुबह 5 बजे उठता हूँ, नींद खुल ही जाती है.....

12-13 वर्ष का था तब से भैंस का दूध निकालने 5 बजे उठने लगा था। दो भैंस थी। गाँव से 3½ किलोमीटर साईकिल से जा कर दूध देता था। लौट कर खाना और फिर भैंस चराने जाना। नहला कर लाता और घर में भैंस बाँध कर 10 बजे स्कूल जाता। माताजी और पिताजी में बहुत झगड़ा था। हरियाणा में पेहवा में कोठियों की रंगाई-पुताई करते पिताजी ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में हमें पैसे नहीं भेजे तब मैं सातवीं में था। मैंने एक महीने ईंट भट्ठे पर मैनेजर के सहायक का काम भी किया। दूध बेचना तो हमारा पेशा है। पिताजी ने पूरे 2004 वर्ष पैसे नहीं भेजे तब मैंने पढाई छोड़ दी। सब कहते : भैंस चराने से कब तक चलेगा, कोई काम सीख ले.....

2005 में मैं बुआ के बेटे के पास गुड़गाँव पहुँचा। तब मैं 15 वर्ष का था। दस दिन खाली बैठना पड़ा। आटा गूँथना, आड़ी-टेढी रोटी बनाना सीखा और 4 ड्युटी जाने वालों के लिये सुबह व रात को खाना बनाया। पहली नौकरी नखरोला में **एनके रबड़** फैक्ट्री में लगी। परसनल मैनेजर ने इन्टरव्यू लिया और ठेकेदार बोला कि छोटा है पर चलेगा। नौकरी के लिये पहुँचे उड़ीसा के मजदूरों ने बायोडाटा में मेरी आयु 18 वर्ष लिखी थी।

सुबह 4½ उठता। भोजन बनाने में लगता। पैदल एक किलो मीटर चल कर 8 बजे से फैक्ट्री में काम। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। जूते के सोल के पेयर बना कर चलती लाइन पर रखता। खड़े-खड़े काम और 12 घण्टे में मात्र आधा घण्टा का भोजन अवकाश। मैं कर नहीं पाता था, सुपरवाइजर चढा रहता। खड़े-खड़े पाँव सूज जाते।

रात की शिफ्ट में बहुत नींद आती। छुपके सो जाता। सुपरवाइजर चीखता। गार्ड ढूँढ कर उठाता। छह घण्टे काम के बाद गेट पास मतलब 12 घण्टे के पैसे काट लेते। दिन में मुझे नींद नहीं आती। रात की शिफ्ट में बुधवार को तो बहुत-ही जोर से नींद आती..... अब मैं रात की ड्युटी में बुधवार को अकसर छुट्टी कर लेता हूँ।

कमरे में 6 लोग हो गये। पहली तनखा में मैंने राशन का हिस्सा 1000 रुपये दिये, एक दरी-कम्बल 250 में खरीदे, गैस सिलेन्डर-चूल्हा 300 में लिये, और बर्तन खरीदे। एक के साथ नखरोला में 700 रुपये किराया में कमरा लिया। वह छोड़ गया और दो महीने मैं अकेला रहा।

सर्दी शुरू थी। सुबह 7½ बजे धुन्ध में जाना और रात 8 बजे लौटना, 15 दिन तो धूप ही देखने को नहीं मिलती। एक दरी, एक कम्बल, एक चद्दर – चारपाई नहीं थी, नीचे सोना। स्वैटर नहीं थी, कोट पहन कर सोता.... रात को नींद ही नहीं आती थी। सुबह कब हो..... 2005 में लगी ठण्ड अब भी याद है। फैक्ट्री में बदबू बहुत थी पर गर्मी थी.... वहाँ अच्छी नींद आती।

एनके रबड़ में काम करते 4 महीने हो गये थे तब दादी की मृत्यु की सूचना मिली। गाँव गया। तीन महीने गाँव में रहा। गाँव में सौ काम। गेहूँ-सरसों काटी, निकाली, भूसा रखा। अरहर काटी, लहसन खोदा, धनिया काटा। धान का खेत तैयार किया, पौध तैयार की, पौध लगवाई। भैंस का चारा लाना, भैंस चराना। घर में सभी काम के बोझ से परेशान रहते हैं – करेंगे नहीं तो खायेंगे क्या ? क्लेश तो घर में होते ही रहते हैं ..... बाबा (दादा) और पिताजी में बहुत झगड़ा। माँ गाँव में रहने लगी तब बँटवारे में तीन बीघा जमीन मिली। मेरी पहली यादें हरियाणा में पेहवा की हैं....

बड़ी बहनों को सरकारी स्कूल में और मुझे प्रायवेट में भेजा। वर्ष-भर बाद बहनें माँ के साथ गाँव चली गई और मैं पिताजी के पास पेहवा रहा। सुबह खाना बना कर पिताजी काम पर चले जाते और मैं स्कूल। एक दिन गेंद की जगह एक बच्चे ने पत्थर फेंका, सिर में लगा, खून बहने लगा, पट्टी करवाने वाला कोई नहीं था, सिर पकड़े मैं बैठा रहा – रात 8 बजे पिताजी आये तब उन्होंने पट्टी करवाई। मुझे बहुत दुख हुआ, अकेला हूँ यहाँ, माँ-बहनों की बहुत याद आई। पिताजी गाँव गये, मेरी परीक्षा थी, मुझे पेहवा छोड़ गये – पड़ोसी खाना खिला देती। बुखार हुई – अब लगता है कि कारण तनाव था। अंक अच्छे आते। पिताजी चाहते थे कि मैं पेहवा में पढूँ। छुट्टियों में गाँव जाता – प्रायवेट स्कूल था इसलिये छुट्टी कम ही होती। बड़ी दो बहनों की शादी के बाद गाँव में माँ के साथ छोटी बहन ही रह गई। मैं गाँव गया था – माँ ने वापस नहीं आने दिया....

दूसरी बार गुड़गाँव पहुँचा तब फिर एनके रबड़ में लगा – इस बार पैकिंग में, और 4 महीने काम किया। बीच में **परफेटी फैक्ट्री (सेन्टर फ्रेश टॉफी)** भी गया पर जँची **(बाकी पेज चार पर)**

फरीदाबाद में मजदूर

लखानी एपरेल मजदूर : "प्लॉट 136 बी सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में जुलाई की तनखा 20 अगस्त तक नहीं दी तो मजदूरों ने काम बन्द कर दिया। चार घण्टे बाद प्रोडक्शन मैनेजर बोला कि कल पैसे मिल जायेंगे, काम करो। काम शुरू कर दिया...... जुलाई की तनखा 2-5 सितम्बर को जा कर दी और अगस्त की आज 30 सितम्बर तक नहीं दी है। अब 350 मजदूर ही रह गये हैं, 400-500 छोड़ गये। यहाँ **मदरहुड, पैरागॉन, ग्लोबल** का माल बनता है। जुलाई तक बहुत काम था— सुबह 9½ से रात 1 बजे तक रोज ड्युटी और सुबह 4 तक रोक लेते। ओवर टाइम सिंगल रेट से — रोटी के लिये कूपन पर कैन्टीन में भोजन ठीक नहीं और कूपन से पेट नहीं भरता। रविवार को करवाये काम को शनिवार को किया दिखाते हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती कियों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन और कई सिलाई कारीगर पीस रेट पर भी। चार ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की तनखा 3000-3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। स्वयं भर्ती कियों के पी.एफ. के पैसे जमा नहीं किये — जून में नौकरी छोड़ कर गयों को फण्ड फार्म भरवाने के लिये नवम्बर में आने की कह रहे हैं। पीने के पानी की बहुत दिक्कत — कैन्टीन में तो एक रुपये वाली थैली लो। शौचालय बहुत कम और गन्दे। बायर आते हैं तब सफाई, मास्क, दस्ताने, दवाई..... वे लोग मजदूरों से बात ही नहीं करते और उनके जाते ही कम्पनी दवा उठा लेती है।"

सुपर ऑटो श्रमिक : "प्लॉट 13 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री से 6 अप्रैल को घर गया। गाँव से लौट कर मार्च तथा अप्रैल में किये काम के पैसे माँगे तो बोले कि कोई ले गया। कौन ले गया? हस्ताक्षर किये होंगे, दिखाओ। इस पर बोले कि कागज फाड़ दिये हैं। श्रम विभाग में शिकायत की है।"

वरुण प्रिसिजन कम्पोनेन्ट्स कामगार : "220 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **शिवम् ऑटो** के माध्यम से **हीरो होण्डा** दुपहियों के गियर की फिनिशिंग होती है। महीने में एक बार शिफ्ट बदलती है और उस रोज ही काम बन्द रहता है। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 40 मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी द्वारा भर्ती 100 मजदूरों में हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 26 दिन के 4200-4400 तथा ऑपरेटरों को 7000-8000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 के ही हैं और इन से दो जगह हस्ताक्षर करवाते हैं — पक्के रजिस्टर में 8 घण्टे की ड्युटी व तनखा 4200-4500 रुपये दिखाते हैं। शौचालय नहीं है — बाहर रेल लाइन पर जाना पड़ता है। पीने का पानी फैक्ट्री के बाहर लोहे के ड्रमों में। एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। एक छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काट लेते हैं। गाली देते हैं। मारपीट भी।"

सहयोग इन्डस्ट्रीज वरकर : " 12 बी गुरुकुल इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। अगस्त की तनखा 15 सितम्बर को दी। लोहे का काम है, चोट लगने पर मजदूर स्वयं उपचार करवाये।"

सुरक्षा कर्मी : "वाई एम सी ए के पास शाखा कार्यालय वाली **सेक्युरिटास** कम्पनी के सैक्टर-6 में प्लॉट 21-22 स्थित **एस पी एल इन्डस्ट्रीज** में 27 गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के गार्ड को 6500 रुपये। डेढ वर्ष से काम कर रहों को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं और पी.एफ. नम्बर कुछ के ही। अप्रैल में सेक्युरिटास कम्पनी ने कहा कि शीघ्र ही सब ठीक कर देगी। इन्टरनेट पर ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि जमा नहीं पा कर एस पी एल के प्रबन्ध निदेशक ने मई से सेक्युरिटास को चेक देने रोक दिये हैं। फिर भी गार्डों को 15 तारीख तक तनखा मिल रही थी पर इधर अगस्त की तनखा का भरोसा नहीं है क्योंकि **एस्कोर्ट्स** कम्पनी ने भी इन्टरनेट पर ई.एस.आई. व पी.एफ. जमा नहीं पाया तो सेक्युरिटास को अगस्त का चेक रोक दिया है। एस्कोर्ट्स की सब फैक्ट्रियों में सेक्युरिटास के गार्ड हैं: 8 घण्टे रोज पर 26 दिन के 5600 रुपये, तनखा 7 तारीख को..... पर अगस्त की 14 सितम्बर तक नहीं दी है।"

कटलर हैमर मजदूर : "20/4 मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में गड़बड़ी कर ठेकेदारों के जरिये रखे 1000-1200 मजदूरों की दिहाड़ियाँ हर महीने खा जाते हैं। किसी को कहेंगे कि कार्ड पंच नहीं था इसलिये दिहाड़ी कटी। किसी को कहेंगे कि गार्ड के रजिस्टर में आना अथवा जाना दर्ज नहीं है इसलिये दिहाड़ी कटी। ड्युटी बाद रोकते हैं पर ओवर टाइम देने की बजाय बदले में छुट्टी देते हैं और यह अगले महीने की 7 तारीख से पहले लो अन्यथा खत्म। बदले वाली छुट्टी लेने पर दिहाड़ी काट लेते हैं — कहते हैं कि कम्प्युटर से सूचना नहीं मिली। दिहाड़ियाँ कटने पर मजदूर चक्कर लगाते हैं फिर भी कईयों को पैसे नहीं मिलते।"

चेरा इंजिनियरिंग श्रमिक : "20/7 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 10 महिला मजदूरों की तनखा 2300-2500 रुपये। पुरुष मजदूरों में हैल्परों की तनखा 3000 तथा ऑपरेटरों की 3800-5500 रुपये। महिलाओं की 11½ तथा पुरुषों की 12½ घण्टे ड्युटी — 3 व 4 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। रविवार को 8 घण्टे ओवर टाइम। ई.एस.आई. 17 की, 45 मजदूरों में पी.एफ. किसी की नहीं। यहाँ **एस्कोर्ट्स** तथा मिकाड़ी में किसी कम्पनी का काम होता है।"

लखानी इण्डिया कामगार : "प्लॉट 265 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में मई में 150-200 घण्टे ओवर टाइम काम करवाया था जिसका भुगतान 1 अक्टूबर को जा कर किया — पैसे खत्म, कुछ के पैसे रह गये हैं। जून और जुलाई में करवाये ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये हैं। ओवर टाइम डेढ की दर से कहते हैं पर हैल्पर को 25 और कारीगर को 27 रुपये प्रतिघण्टा ही देते हैं। इधर तीन महीने आर्डर कम थे। तनखा देरी से — अगस्त का वेतन 13 से 19 सितम्बर तक दिया। फ्रान्स की **केचुआ** कम्पनी का माल बन रहा है और **पुमा** का काम फिर शुरू हो रहा है। अब कम्पनी ओवर टाइम की कहने लगी है — पीछे के पैसे पहले दो कह कर मजदूर इनकार कर रहे हैं। जुलाई से देय डी ए के 134 रुपये अगस्त की तनखा में भी नहीं दिये। फैक्ट्री में 1500 महिला मजदूर और 1500 पुरुष मजदूर चप्पल, सैण्डल, जूते बनाते हैं। कैन्टीन में 12, 12½, 1, 1½ बजे मजदूरों के लिये और 2 बजे स्टाफ के लिये भोजन अवकाश। भोजन खराब, फैक्ट्री से बाहर नहीं जाने देते, मजबूरी में खाते हैं।"

आर वी इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 118 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 30 महिला मजदूरों को 3200 रुपये महीना देते हैं पर हस्ताक्षर 4300 पर करवाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 100 मजदूरों में 50 की ही हैं। कम्पनी वार्षिक बोनस नहीं देती पर बोनस के कागजात पर हस्ताक्षर करवाते हैं।"

श्याम एलॉयज श्रमिक : " प्लॉट 40 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 35 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर तथा ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूर **एस्कोर्ट्स ट्रैक्टर** के भारी हिस्से-पुर्जो और **ए बी बी** की मोटर बॉडी की कास्टिंग व मशीनिंग करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 35 स्थाई मजदूरों के ही हैं। कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 3500 तथा ऑपरेटरों की 4500-5000 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3500 रुपये। सुबह 8½ से सांय 5 की शिफ्ट है और रात 10-11-12 तक रोकते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। शौचालय बहुत गन्दे। पूरी फैक्ट्री में धूल-धुँआ, आसपास भी।"

सेफ एक्सप्रेस कैरियर मजदूर : " प्लॉट 9 ए सैक्टर-6 स्थित ट्रान्सपोर्ट कम्पनी के शाखा कार्यालय में 50-60 लोग, ड्राइवर-सहायक-क्लर्क वर्षों से काम कर रहे हैं। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ड्राइवरों और सहायकों की तो 24 घण्टे की ड्युटी है, क्लर्कों को भी रोज 14-15 घण्टे काम करना पड़ता है। ओवर टाइम का कोई भुगतान नहीं। सहायकों को महीने के 3000-3500 रुपये और संग में भोजन। ड्राइवरों को महीने के 4000-4500 रुपये तथा फरीदाबाद से बाहर 100 रुपये रोज खर्चा। क्लर्कों को महीने के 4000-6000 रुपये।"

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निःशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

गुड़गाँव में मजदूर

22 वर्षीय सिलाई कारीगर गौतम। दो बहनों और छोटे भाई के साथ विधवा माँ गाँव में। जमीन नहीं। **मोडलामा** में सिलाई कार्य में लगा गौतम। फैक्ट्री से ब्रेक। उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 243 में **इनफोसिस टैक्नोलोजीज** की ऊँची इमारत के शीशों की सफाई करते समय 23 सितम्बर को गौतम सातवीं मंजिल से गिरा। मृत्यु।

एशियन हैण्डीक्राफ्ट श्रमिक : "310 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ काम आरम्भ करते हैं और रात 1½, अगली सुबह 8 तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम दिखाते नहीं, पैसे उसी दिन अथवा अगले रोज दे देते हैं। रात 1½ बजे छूटते हैं तब दूर वाले फैक्ट्री में ही सो जाते हैं। सुबह 8 बजे छूटते हैं तब ब्रेड पकौड़े देते हैं — सुबह 9½ से फिर काम शुरू करो। रात-भर काम के बाद छुट्टी कर ली तो वह दिहाड़ी तो जायेगी ही, रात को किया काम भी जायेगा। मजबूरी में 22½ घण्टे लगातार काम के बाद फिर काम में जुटते हैं। तनखा 4500 दिखाते हैं पर देते 4200 रुपये हैं। बोनस 8.33 दिखाते हैं पर देते 5 प्रतिशत हैं।"

तोरस होम फर्निशिंग कामगार : "418 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 8 की शिफ्ट है, रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3200, चेकर 4000, सिलाई कारीगर 4200 रुपये। शौचालय बहुत गन्दे। यहाँ **पीयर वन, एल एल विन, विवेरस, मरीना, बी बी बी** का काम होता है।"

रेशम इम्ब्राइड्री वरकर : "741 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्पर को 4000 तथा ऑपरेटर को 6000 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। यहाँ **गैप, चिकोस** का काम होता है।"

फ्लोलिन्क मजदूर : "141 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 200 घण्टे तक ओवर टाइम। भुगतान सिंगल रेट से और गड़बड़ कर 200-300 रुपये खा भी जाते हैं। हैल्परों की तनखा 4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पीएफ. नहीं। हस्ताक्षर करवा कर पिछले वर्ष बोनस नहीं दिया, 100-200 रुपये दिये।"

भूरजी सुपरटैक श्रमिक : "272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सप्ताह में शिफ्ट बदलती है — शनिवार रात 8 से रविवार सुबह 8 वाली शिफ्ट को जबरन रविवार रात 8 बजे तक रोकते हैं, लगातार 24 घण्टे काम। ओवर टाइम सिंगल रेट से भी कम, 16 रुपये प्रतिघण्टा। तनखा देरी से — अगस्त की 22 सितम्बर को दी। पाँच सौ के नोट लाते हैं और बची रकम को अगली तनखा के साथ लेना कहते हैं, पर देते नहीं। हर महीने 200-400 रुपये खा जाते हैं। गाली देते हैं। साल-भर बाद मिलेगा कह कर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं, कहते हैं नहीं मिलेंगे। काम कम है कह कर 24 सितम्बर को 12 मजदूर निकाले पर सितम्बर में किये काम के पैसे नहीं दिये।"

नूरजहाँ एक्सपोर्ट कामगार : "606 तथा 608 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्रियों में हैल्परों की तनखा 3500-3600 रुपये। अगस्त की आधी तनखा 10 सितम्बर को दी और हस्ताक्षर करवा लिये, बाकी आधी तनखा आज 25 सितम्बर तक नहीं दी है। यहाँ **नूर, कम्पनी सी** के रजाई-तकिया कवर की सिलाई होती है।"

आई एम टी मानेसर

परफैक्ट टूल्स मजदूर : "232 व 238 सैक्टर-6 आई एम टी मानेसर से फैल कर कार्य बावल पहुँच गया है। नाम बदलता रहा है — **आर आर के टूल्स** के बाद अब **जे आर डी टूल्स परफैक्ट** है। स्थाई हैं 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। अब सप्ताह में शिफ्ट बदलती है इसलिये रविवार को दिन में 12 घण्टे ही काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बावल फैक्ट्री में 185 पावर प्रेस लग गई हैं और लक्ष्य 285 पावर प्रेस का है। यहाँ **होण्डा, हीरो होण्डा, बजाज, यामाहा, टी वी एस** दुपहियों तथा **मारुति सुजुकी, होण्डा सिएल** कारों के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। खड़े-खड़े 12 घण्टे काम करना पड़ता है। हाथ कटते रहते हैं। बावल फैक्ट्री में शौचालय नहीं — बाहर जाओ।"

ऐनेक्सको टैक्नोलॉजी श्रमिक : "157 नौरंगपुर स्थित फैक्ट्री में खेलों के चक्कर में ए-शिफ्ट सुबह 7 से साँय 6½ कर एक घण्टा बढा दी है। फैक्ट्री में चिपकी सूचना : *कम्पनियों के संघ तथा पुलिस आयुक्त के बीच चर्चा के बाद तय हुआ है कि कम्पनी जो पहचान-पत्र देगी उसे पुलिस मान लेगी। गुड़गाँव में अधिकांश मजदूरों के पास पहचान के प्रमाण नहीं हैं। खेलों की सुरक्षा के लिये पुलिस की जाँच से परेशान हो कर बड़ी सँख्या में मजदूर गाँवों को भागने लगे। इससे फैक्ट्रियों में उत्पादन प्रभावित होने लगा। बढ रही समस्या का इस प्रकार समाधान कर लिया गया है।*"

एडिगियर इन्टरनेशनल कामगार : "150 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 1 बजे तक काम करते 800 मजदूर **रीबोक, एडिडास, पुमा** के जैकेट, ट्रैक सूट, लोअर, हाफ पैन्ट, जीन्स, टी-शर्ट की सिलाई करते हैं। महीने में 3 रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर वरकर: "1 व 2 सैक्टर-3 स्थित फैक्ट्री में हर सोमवार को बी-शिफ्ट में रात 11½ से 1½ तक ओवर टाइम जनवरी तक होगा। रविवार, 3 अक्टूबर को पूरी फैक्ट्री में ओवर टाइम। निर्धारित उत्पादन नहीं हुआ कह कर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की अगस्त की तनखा से 475 रुपये और स्थाई मजदूरों के 2500 रुपये काट लिये। बाहर से बन कर आते हिस्से-पुर्जों की कमी के कारण काम रुकता है और सजा फैक्ट्री में काम करते मजदूरों को। बसें स्थाई मजदूरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के बीच कड़वाहट का अखाड़ा बनी हैं : ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को सीट से उठा देना, बस से उतार देना, 200-400 रुपये जुर्माना लगा देना, नौकरी से निकलवा देना दलदल का निर्माण है। और फिर, अधिक काम, तनखा में भारी अन्तर, टीम लीडर बने स्थाई मजदूरों का व्यवहार ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बहुत अखरते हैं।"

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "21 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में दो-चार वर्ष से काम कर रहे ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों से अचानक पहचान के प्रमाण माँगे तो मजदूरों ने गाँव जा कर लाने के लिये 15 दिन का समय माँगा। इस से तो फैक्ट्री बन्द हो जायेगी.... फिर कभी लाना कह कर 4 फोटो माँगी। एक जगह नाम-पते भर कर, बाकी खाली छोड़ कर 6 जगह हस्ताक्षर करवाये — एक पुलिस को, एक कम्पनी में, एक ठेकेदार के पास, एक जाँच वालों के लिये...... खेलों के चक्कर में सुरक्षा के लिये पुलिस द्वारा परेशान किये जाने से मजदूरों के भाग जाने को रोकने के लिये यह सब हुआ। फैक्ट्री में इधर पावर प्रेसों पर सुरक्षा उपाय पुनः लगाने की तैयारी है, बहरे होने से बचाव के लिये कान के प्लग मँगवाये हैं। पर अगस्त में किये ओवर टाइम के पैसे आज 26 सितम्बर तक नहीं दिये हैं। जुलाई से देय डी ए के 134 रुपये भी नहीं दिये हैं।"

वर्कशॉप... (पेज चार का शेष)

रात 9 तक, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, वार्षिक बोनस नहीं।"

देवेन्द्रा मशीन टूल्स श्रमिक : " नगला गुजरान, सोहना रोड़ स्थित वर्कशॉप में अब 30 मजदूर मोनोब्लॉक पम्प की कास्टिंग तथा मशीनिंग करते हैं। अधिकतर काम ठेके पर लेकिन उत्पादन निर्धारित और ड्युटी सुबह 8½ ही आरम्भ होती है पर छूटने का कोई समय नहीं। कुछ चुनिन्दा की ही ई.एस.आई व पी.एफ. हैं। वार्षिक बोनस किसी को नहीं। शौचालय नहीं है, बाहर जाना पड़ता है। वर्कशॉप बन्द करेंगे कह कर 3 महीने पहले 8 महिला मजदूर नौकरी से निकाल दी — उन्होंने हिसाब के लिये श्रम विभाग में शिकायत की है।"

कर्मा इंजिनियरिंग कामगार : " सैक्टर-22 रचना सिनेमा के पास स्थित वर्कशॉप में 25 मजदूर रोज 12 घण्टे की एक शिफ्ट में वाहनों के पुर्जे बनाते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। हैल्पर को महीने के 3000 और ऑपरेटर को 4000-4200 रुपये। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

सुनील रबड़ वर्क्स वरकर : " 108 मुजेसर स्थित वर्कशॉप में दो मजदूर हाइड्रोलिक मोल्डिंग मशीन और हैण्ड प्रेस चलाते हैं। तनखा 3000 और 3500 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा 10 से 15 तारीख के बीच। प्रदूषण बहुत।"

दिल्ली में मजदूर

अगस्त से देय मँहगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा दिल्ली सरकार द्वारा अक्टूबर आरम्भ तक नहीं।

एस एम एस एक्सपोर्ट मजदूर : "डी-28 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में दो ठेकेदारों के जरिये रखे 60 मजदूरों की तनखा 2600-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सिलाई विभाग में 10 हैल्पर तथा 200 टेलर कम्पनी ने स्वयं रखे हैं और उन्हें दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। सुबह 9½ से रात 9½ की ड्युटी रोज है और रात 1½ बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से — रात 9½ तक काम पर एक घण्टा भोजन व चाय का काट कर 3 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं, रात 1½ बजे तक काम तो ओवर टाइम 8 घण्टे। ठेकेदार गड़बड़ कर हर महीने 200-500 रुपये खा भी जाते हैं। एक ठेकेदार के अन्य फैक्ट्रियों में भी ठेके हैं और वह रात 9½ बजे छूटने पर अन्य फैक्ट्री में काम करने जबरन भेजता है — जाओ काम करो अन्यथा कल से मत आना।"

क्रियेटिव इम्पैक्स श्रमिक : "सी-54/2 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में **सृष्टि फैशन, मनसा फैशन, क्रियेटिव चेन स्टोर** के नाम से भी हाजिरी लगती है और तनखा भी अलग-अलग देते हैं जबकि सिलाई तथा फिनिशिंग में सब एक हैं। यहाँ 300 मजदूर काम करते हैं, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। धागे काटने वालों की तनखा 3000 रुपये, प्रेसमैन तथा काज-बटन वालों की 4000, चैकर की 5000 और सिलाई कारीगरों की 5300-5500 रुपये। सुबह 9 से साँय 5½-7½, रात 9½-1 बजे की ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। पीने का पानी खराब।"

यूनिवर्सल मैटल इन्डस्ट्रीज कामगार : "सी-97 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3000 तथा कारीगरों की 4000 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सुबह 9 से रात 9½ रोज काम और फिर रात 1½ बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को भी काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

प्रिमियर पेपर पैकेजिंग ऑफ राजा इस्पात वरकर : "बी-27 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं। इधर कम्पनी ने नोटिस लगाया है कि यहाँ काम बन्द कर नोएडा में होगा और वहाँ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देंगे। स्थानान्तरण की परेशानियाँ और ऊपर से तनखा घटाना..... कम्पनी कह रही है कि नोएडा नहीं जाना चाहते हो तो इस्तीफे लिख कर हिसाब लो।"

सुप्रीम फर्नीचर मजदूर : " बी-66 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इधर 15 दिन से खेलों के कारण लकड़ी के आने व फर्नीचर के जाने में दिक्कतों के कारण सुबह 9 से साँय 5½ की ड्युटी है अन्यथा रात 9½ तक प्रतिदिन और महीने में 20 रोज रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

सिलपैक कामगार : "बी-128 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2400-2700 रुपये। ड्युटी सुबह 9 से रात 9 रोज और महीने में 15 बार रात 1 बजे तक रोकते हैं। रविवार को 8 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। एक मजदूर से पानी का घड़ा फूट गया तो उसके 300 रुपये काट लिये। जून में कम्पनी ने 100 रुपये एडवान्स दिये और फिर 200 रुपये काटे — बोले कि 200 रुपये दिये थे।"

वर्कशॉप वरकर

किंग ऑफसेट मशीनरी मजदूर : " मुजेसर नई बस्ती स्थित वर्कशॉप में 20 मजदूर महीने में 4 कीमती ऑफसेट प्रिन्टिंग प्रेस तैयार करते हैं। हिस्से-पुर्जे बाहर से बन कर आते हैं। यहाँ टूल रूम और असेम्बली विभाग हैं। हैल्परों की तनखा 3000 तथा कारीगरों की 5000-10,000 रुपये। ड्युटी सुबह 8½ से (बाकी पेज तीन पर)

आप-हम क्या-क्या.... (पेज एक का शेष)

नहीं। सी एन सी मशीन चलाना सीखने के लिये **मूग ऑटोमोटिव** में कम तनखा में लगा — सुपरवाइजर फुफेरा भाई था। वहाँ 12 दिन बाद छोड़ दिया अन्यथा झगड़ा हो जाता क्योंकि भाई चिल्लाता था। गाँव चला गया। 2006 की पूरी सर्दी गाँव में रहा।

फिर गुड़गाँव लौटा। काम ढूँढने में 15 दिन लगे। आई एम टी मानेसर में बहुत घूमा। कई जगह इन्टरव्यू दिये। **विशाल रिटेल** फैक्ट्री (16-17 सैक्टर-5) में लगा। प्रेसमैन लगा — स्टीम प्रेस पहली बार की। रिकार्ड कीपर बनाया और फिर छोटा सुपरवाइजर। सिलाई सीखी। तनखा में देरी पर पहले दिन थोड़े समय मजदूरों ने काम बन्द किया। दूसरे दिन 11 बजे से काम बन्द। जनरल मैनेजर बोला कि 3 बजे तनखा आ जायेगी। काम शुरू किया पर तनखा नहीं आई तो फिर काम बन्द किया — रात 8 बजे पैसे दिये। एक वर्ष काम किया। फैक्ट्री बन्द हो गई। ठेकेदार भाग गया। एक वर्ष के पी.एफ. के पैसे गये.....

15 दिन बीमार पड़ा था। चिकन पॉक्स था। खाना नहीं खाया गया। चला नहीं जाता था, सोया नहीं जाता था। छूत के डर से साथ रहता एक कमरा छोड़ गया — बुरा लगा, मैं उसका खाना बना देता था। दूसरे ने 15 दिन छुट्टी की और वह खाना बनाता, दवा-पानी करता, कपड़े धोता था।

विशाल रिटेल फैक्ट्री बन्द होने पर **ओरियन्ट क्राफ्ट** (15 सैक्टर-5) में टेलर लगा। रोज सुबह 9½ से रात 1 की ड्युटी और शनिवार को सुबह 9½ से अगली सुबह 4 तक काम। ओवर टाइम दुगुनी दर से। एक शनिवार को छुट्टी की तो निकाल दिया। कम्प्युटर से डाटा उड़ गया कह कर कई चक्कर कटवाने के बाद पैसे दिये। ओरियन्ट क्राफ्ट में 12 दिन काम के बाद **गुलाटी एक्सपोर्ट** (सैक्टर-4) में 7 दिन काम किया।

तब **एस टी आई सैन्हो** (161 सैक्टर-4) में लगा जहाँ **मारुति सुजुकी** और **होण्डा** कारों के ब्रेक पाइप बनते हैं। वहीं सीख कर बैन्डिंग मशीन चलाई। यहाँ अधिकतर सुपरवाइजर महिलायें हैं। हमारी सुपरवाइजर का व्यवहार ठीक नहीं था — शौचालय पूछ कर जाओ, निर्धारित उत्पादन पूरा करने के बाद भी मशीन चलाओ, दो-चार पीस अधिक बनाओ, पीस रिजेक्ट नहीं होना चाहिये, जबरन 8 घण्टे ओवर टाइम। दो-चार दिन यह बात दिमाग में आई कि एक औरत मेरी सुपरवाइजर है, फिर आदत पड़ गई — नौकरी करनी है तो बात सुननी पड़ेंगी। सात महीने बाद छुट्टी ले कर गाँव गया — बहन बीमार थी। लौटते समय सुपरवाइजर भाई के एक्सीडेन्ट की सूचना मिली। दिल्ली में जय प्रकाश ट्रॉमा सेन्टर में भाई को रक्त दिया और फिर 15 दिन वहाँ उनकी देखभाल की। रिश्तेदारों को सम्भालने में 10-15 दिन और लगे। यह सब बताने पर एस टी आई सैन्हो फैक्ट्री में फिर रख लिया। पाँच महीने बाद ब्रेक किया।

8 सैक्टर-3 आई एम टी मानेसर में **ए जी इन्डस्ट्रीज** में लगा। एक सौ स्थाई मजदूर तीन शिफ्टों में और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 500 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **हीरो होण्डा** के फाइबर के साइड कवर बनाते थे। स्थाई मजदूर यूनियन बनाने लगे तो जनवरी-फरवरी में इस वर्ष कम्पनी ने 18 को बाहर निकाला। बीस मार्च को काम बन्द कर सब मजदूर एकत्र हो गये। दो बसों में भर कर आई पुलिस ने फैक्ट्री से निकाल कर लाठियाँ बरसाई। एक का हाथ टूटा, कई के सिर फूटे। साँय 6 बजे कुछ मजदूर अन्दर ले जा कर काम शुरू — मैनेजर भी लगे। हीरो होण्डा, गुड़गाँव से बसों में मजदूर लाये गये, धारूहेड़ा और गाजियाबाद से भी। गेट से नई भर्ती। यूनियनों द्वारा 26 मार्च को गुड़गाँव में दस हजार का प्रदर्शन, भाषण। फिर कुछ नहीं। शर्तों पर हस्ताक्षर कर, 18 को बाहर छोड़ कर 2-3 अप्रैल को स्थाई मजदूर फैक्ट्री में गये। यहाँ काम करते 4 महीने हो गये थे तब सुपरवाइजर से झगड़ा कर नौकरी छोड़ी और गाँव चला गया।

वापस आने लगा तो बहन और माँ रोने लगी। तीन दिन और रुका। बैग नहीं लिया, किराया रास्ते में दोस्त से लिया और बिना बताये गुड़गाँव चला आया। आठ दिन काम ढूँढने के बाद **कुमार प्रिन्टर्स** (24 सैक्टर-5) में लगा। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। हर मशीन पर, हर मोड़ पर कैमरे। पचास स्थाई मजदूर और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 225 वरकर इन्डस्ट्रीयल प्रिन्टिंग करते हैं। इधर खेलों के चक्कर में सुरक्षा के लिये पुलिस द्वारा परेशान किये जाने के डर से 50-60 मजदूर भाग गये हैं। मजदूर कम पड़ रहे हैं इसलिये सुबह 8 बजे काम आरम्भ करने वालों को रात 8 बजे नहीं छोड़ते, जबरन रात 1 बजे तक काम करवाते हैं। भिवाड़ी से रोज 30 मजदूर ले कर बस भी आ रही है। दिन तय नहीं किया है पर मैं फिर गाँव जा रहा हूँ......(जारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011